যঈফ ও জাল হাদিস

হাদিস নাম্বারঃ ১৩৬২

১/ বিবিধ

আরবী

ليسأل أحدكم ربه حاجته كلها، حتى يسأله شسع نعله إذا انقطع

ضعيف

أخرجه الترمذي (4/292 ـ تحفة و22/126/1 ـ مخطوط) وابن حبان (2402) وابن السني في " عمل اليوم والليلة " (348/2) والمخلص في " الفوائد المنتقاة " (13/248/2) وابن عدي في " الكامل " (331/2) وأبو نعيم في " أخبار أصبهان " (2/289) والضياء المقدسي في " الأحاديث المختارة " (1/501) من طرق عن قطن ابن نسير: حدثنا جعفر بن سليمان عن ثابت عن أنس قال: قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: فذكره. وقال الترمذي

" هذا حديث غريب، ورواه غير واحد عن جعفر بن سليمان عن ثابت عن النبي صلى الله عليه وسلم مرسل، ولم يذكروا فيه: عن أنس. حدثنا صالح بن عبد الله قال: حدثنا جعفر بن سليمان عن ثابت البناني أن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال

قلت: فذكره دون قوله: " كلها ". وزاد مكانها: " حتى يسأله الملح، وحتى يسأله..

قلت: وهكذا مرسلا رواه ابن عدي أيضا من طريق القواريري: حدثنا جعفر به دون الزيادة. وزاد عقبه: " فقال رجل للقواريري: إن لي شيخا يحدث به عن جعفر عن ثابت عن أنس؟ فقال القواريري: باطل. وهذا كما قال

قلت: يعني أن وصله باطل، وأن الصحيح إرساله
وقال الضياء عقب الحديث: " وقد ذكره علي بن المديني من مناكير جعفر بن سليمان، قلت: ولا أعلم رفعه إلا قطن بن نسير
قلت: وهو مختلف فيه، روى له مسلم في " صحيحه " حديثا واحدا، وذكره ابن حبان في " الثقات "، وضعفه أبو زرعة، وقال ابن عدي: " يسرق الحديث ويوصله
وقال ابن أبي حاتم (3/2/138) : " سئل أبو زرعة عنه؟ فرأيته يحمل عليه. ثم ذكر أنه روى أحاديث عن جعفر بن سليمان عن ثابت عن أنس مما أنكر عليه
قلت: فالحديث من مناكيره، لا من مناكير شيخه جعفر، فما قاله ابن المديني فيه نظر

هذا وقد كنت حسنت الحديث فيما علقته على " المشكاة " رقم (2251 ـ 2252) وكانت تعليقات سريعة لضيق الوقت، فلم يتح لي يومئذ مثل هذا التوسع في التتبع والتخريج الذي يعين على التحقيق والكشف عن أخطاء الرواة، وأقوال الأئمة فيهم وفي أحاديثهم المنكرة منها. والله تعالى هو المسؤول أن يغفر لي خطئي وعمدي، وكل ذلك عندي

تنبيه : لم يرد الحديث في طبعة بولاق من " سنن الترمذي "، فلا أدري أسقط منها أومن أصلها إطلاقا؟ أم من المكان الذي هو فيه في المخطوطة ونسخة " التحفة "؟ وهو آخر كتاب الدعوات، وهو فيه في طبعة الدعاس رقم (3607) والله أعلم

تنبيه آخر: إن الحديث من الطريق المرسلة التي فيها الزيادة، قد رواها البزار موصولا من حديث أنس، فقال الهيثمي في " المجمع " (10/150) . " ورجاله رجال الصحيح غير سيار بن حاتم وهو ثقة

ونقل هذا عنه المناوي وأقره، وفي ذلك كله نظر، فإن سيارا هذا حاله مثل حال قطن تماما، وقد أورده الذهبي في " الضعفاء " وقال: " قال القواريري: كان معي في الدكان، لم يكن له عقل، قيل: أتتهمه؟ قال: لا. وقال غيره: صدوق سليم الباطن

فهو من الضعفاء الذين لا يحفظون، فيقعون في الخطأ، ولا يتعمدونه. ثم هو من الرواة عن جعفر بن سليمان شيخ قطن في هذا الحديث، فالظاهر أنه متابع لقطن في وصله، ولكني لا أقطع بذلك لأني لم أقف على إسناد البزار، ولقول الضياء

المتقدم: " ولا أعلم رفعه إلا قطن ". والله سبحانه وتعالى أعلم

ثم وقفت على إسناد البزار بطريق " كشف الأستار " ـ كتاب الأدعية ـ قال: حدثنا سليمان بن عبيد الله الغيلاني: حدثنا سيار بن حاتم: حدثنا جعفر بن سليمان عن ثابت عن أنس به وزاد
وحتى يسأله الملح

وقال الحافظ ابن حجر في " زوائده " (ص 305) : وإسناده حسن
قلت: وفيما قاله نظر من وجهين

الأول: مخالفته للذين أرسلوه، منهم صالح بن عبد الله ـ وهو الباهلي الترمذي، والقواريري، واسمه عبيد الله بن عمر ـ كما تقدم، وكلاهما ثقة

والآخر: أن سيارا فيه ضعف كما تقدم عن القواريري، وقد أشار إلى ذلك الحافظ نفسه بقوله فيه في " التقريب ": صدوق له أوهام
فمن كان مثله في الوهم لا يرجح وصله على إرسال من أرسله من الثقات، كما لا

يخفى على عارف بعلم مصطلح الحديث، بل لوقيل فيه: إنه لا يحتج به مطلقا ولو لم يخالف لم يكن بعيدا عن الصواب، وإلى ذلك يشير كلام الحافظ في مقدمة كتابه المذكور في فصل (المراتب)

لا يقال: قد تابعه قطن بن نسير كما تقدم، لأننا نقول: قد عرفت من قول ابن عدي المتقدم فيه: أنه يسرق الحديث ويوصله. فمن الممكن أن يكون سرقه من سيار هذا. والله سبحانه وتعالى أعلم

وقد جاء الحديث عن عائشة رضي الله عنها نحوه موقوفا عليها، فلا يصلح شاهدا ولكن البعض ذكروه في المرفوع فوجب الكلام عليه، وهو التالي

سلوا الله كل شيء، حتى الشسع، فإن الله إن لم ييسره، لم يتيسر

বাংলা

১৩৬২। তোমাদের যে কেউ যেন তার প্রতিপালকের নিকট তার যাবতীয় প্রয়োজন পূর্ণ করার জন্য প্রার্থনা করে, এমনকি তার সেগুলের ফিতা যদি ছিড়ে যায় তাহলে সেটিও।

হাদীসটি দুর্বল।

হাদীসটিকে ইমাম তিরমিযী (৪/২৯২), ইবনু হিব্বান (২৪০২), ইবনুস সুন্নী "আমলুল ইয়াওম অললাইলাহ" গ্রন্থে (২/৩৪৮), আলমুখলিস "আলফাওয়াইদুল মুনতাকাত" গ্রন্থে (১৩/২৪৮/২), ইবনু আদী "আলকামেল" গ্রন্থে (২/২৩১), আবু নুয়াইম “আখবারু আসবাহান” গ্রন্থে (২/২৮৯) ও যিয়া মাকদেসী "আল-আহাদীসুল মুখতারাহ" গ্রন্থে (১/৫০১) কাতান ইবনু নুসায়ের হতে, তিনি জাফার ইবনু সুলায়মান হতে, তিনি সাবের হতে, তিনি আনাস (রাঃ) হতে, তিনি বলেনঃ রসূল সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম বলেছেনঃ ...।

তিরমিযী বলেনঃ হাদীসটি গারীব। একাধিক বর্ণনাকারী জাফার ইবনু সুলায়মান হতে, তিনি সাবেত হতে, তিনি নবী সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম হতে মুরসাল হিসেবে বর্ণনা করেছেন। তারা সনদের মধ্যে আনাস (রাঃ)-কে উল্লেখ করেননি।

আমি (আলবানী) বলছিঃ ইমাম তিরমিযী এক বর্ণনায় (كلها) শব্দটি ছাড়া বর্ণনা করে তার স্থানে (حتى يسأله

الملح، وحتى يسأله) "এমনকি তার নিকট লবণও চাবে, এমনকি তার কাছে চাইবে" এ ভাষা উল্লেখ করেছেন।

আমি (আলবানী) বলছি এভাবে মুরসাল হিসেবে ইবনু আদীও কাওয়ারীরী সূত্রে জাফার হতে ... বর্ণনা করে শেষে বলেছেনঃ এক ব্যক্তি কাওয়ারীরীকে বললেনঃ আমার এক শাইখ রয়েছেন তিনি হাদীস বর্ণনা করেন জাফার হতে, তিনি সাবেত হতে, তিনি আনাস (রাঃ) হতে। কাওয়ারীরী বললেনঃ এটি বাতিল।

আমি (আলবানী) বলছিঃ অর্থাৎ মওসূল হিসেবে বর্ণনা করাটা বাতিল। মুরসাল হিসেবে সঠিক।

যিয়া মাকদেসী হাদীসটির শেষে বলেনঃ আলী ইবনুল মাদীনী হাদীসটিকে জাফার ইবনু সুলায়মানের মুনকারগুলোর মধ্যে উল্লেখ করেছেন। আমি বলছিঃ কাতান ইবনু নুসায়ের ছাড়া অন্য কেউ হাদিসটিকে মারফূ' হিসেবে বর্ণনা করেছেন বলে আমি জানি না।

আমি (আলবানী) বলছিঃ কাতান ইবনু নুসায়েরের ব্যাপারে মতভেদ করা হয়েছে। ইমাম মুসলিম তার থেকে একটি মাত্র হাদীস বর্ণনা করেছেন। ইবনু হিব্বান তাকে নির্ভরযোগ্যদের অন্তর্ভুক্ত করেছেন। আবু যুর'য়াহ তাকে দুর্বল আখ্যা দিয়েছেন। ইবনু আদী বলেনঃ তিনি হাদীস চুরি করতেন এবং (মুরসালকে) মওসূল বানিয়ে ফেলতেন।

ইবনু আবী হাতিম (৩/২/১৩৮) বলেনঃ তিনি জাফার ইবনু সুলায়মান হতে, তিনি সাবেত হতে, তিনি আনাস (রাঃ) হতে কতিপয় হাদীস বর্ণনা করেন যেগুলোকে মুনকার হিসেবে চিহ্নিত করা হয়েছে।

আমি (আলবানী) বলছিঃ হাদীসটি তার (কাতানের) মুনকারগুলোর অন্তর্ভুক্ত। তার শাইখ জাফারের মুনকারের অন্তর্ভুক্ত নয়। ইবনুল মাদীনী যে কথা বলেছেন সে ক্ষেত্রে বিরূপ মন্তব্য রয়েছে।

আমি আলবানী হাদীসটিকে "মিশকাত" গ্রন্থে হাসান আখ্যা দিয়েছিলাম। কিন্তু পরবর্তীতে হাদীসটির সমস্যা আমার নিকট স্পষ্ট হয়।

যে হাদীসটির মধ্যে উল্লেখ করা হয়েছে যে, এমনকি লবণ হলেও তা আল্লাহর নিকট চাইবে। সে হাদীসটিকে হাফিয ইবনু হাজার হাসান আখ্যা দেন। কিন্তু দুটি কারণে তা সঠিক নয়ঃ

১। নির্ভরযোগ্য বর্ণনাকারীগণ যারা মুরসাল হিসেবে হাদীসটি বর্ণনা করেছেন এ ভাষাটি তাদের ভাষার বিরোধী হওয়ার কারণে।

২। এ ভাষার সনদে সাইয়্যার ইবনু হাতিম নামক একজন বর্ণনাকারী রয়েছেন তার মধ্যে দুর্বলতা রয়েছে। যেমনটি কাওয়ারীরীর উদ্ধৃতিতে উল্লেখ করা হয়েছে।

হাফিয ইবনু হাজার নিজে "আত-তাকরীব" গ্রন্থে ইঙ্গিত দিয়েছেন। তিনি সত্যবাদী, তার সন্দেহমূলক বর্ণনা রয়েছে।

(মূল গ্রন্থে আরো বিস্তারিত আলোচনা করা হয়েছে প্রয়োজনে তা দেখার জন্য অনুরোধ করছি)।

হাদিসের মান: যঈফ (Dai'f) পুনঃনিরীক্ষিত

পাবলিশারঃ তাওহীদ পাবলিকেশন

Link — https://www.hadithbd.com/hadith/link/?id=72241

হাদিসবিডির প্রজেক্টে অনুদান দিন